समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अप्रैल २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ४

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतीय समिति की बैठक : ८ अप्रैल, हरिद्वार

समाज दिखावा एवं आडम्बर से बचे "सादगी-क्रांति" का आह्वान

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया का देहावसान

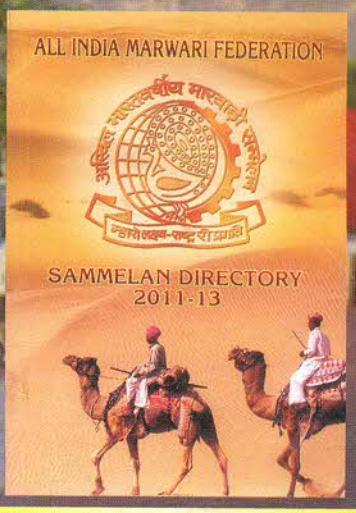

सम्मेलन डायरेक्टरी २०११-१३ का विमोचन

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

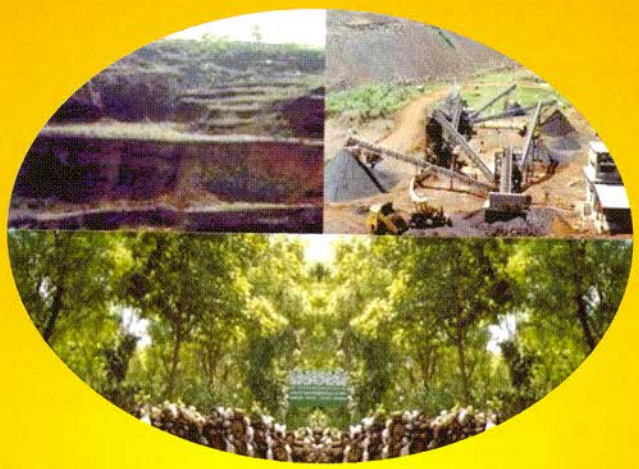

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ अप्रैल २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ४ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य – ***सीताराम शर्मा***	५
अध्यक्षीय : तीर्थनगरी हरिद्वार : संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७
तीर्थनगरी में बैठक होने से कार्य की लालसा तीव्र होती है – ***संतोष सराफ***	९
धार्मिक बनें, धर्मभीरु नहीं – ***संजय हरलालका***	११
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया को श्रद्धांजलि	१२
सामाजिक कार्यकर्ता गोविन्द शर्मा का देहावसान	१२
अखिल भारतीय समिति की बैठक : हरिद्वार में	१३-१८
प्रान्तीय समाचार – पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी की पहली बैठक.....	१९-२०
उच्च शिक्षा कोष : आवेदन पत्र आमंत्रित	२०
प्रान्तीय समाचार – झारखण्ड : राजस्थान दिवस पर कवि सम्मेलन	२१
प्रान्तीय समाचार – बिहार : डॉ. राममनोहर लोहिया व्याख्यानमाला	२३
प्रान्तीय समाचार – कानपुर शाखा : होली मिलन एवं मारवाड़ी पंचांग का विमोचन	२४
प्रान्तीय समाचार – जोरहाट शाखा : सामूहिक फाग उत्सव एवं हास्य कवि सम्मेलन	२५
प्रान्तीय समाचार – छत्तीसगढ़ : प्याऊ का उद्घाटन	२६
याद किये गए कवि दम्माणी 'मस्त'	२६
नाटक : संस्कार – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	२७-२८
राजस्थानी कहानी : सुख आपणै आसपास – ***नथमल केडिया***	२९
कविता / राजस्थानी कविता – ***नथमल केडिया/प० रमेश मोरोलिया***	३०
पुस्तक समीक्षा – आत्म मंथन	३१
SMS की दुनिया	३१
सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील	३२
सम्मेलन के नए आजीवन सदस्यों का स्वागत	३३
सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत	३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

पत्रिका के कलेवर में निखार

'समाज विकास' का फरवरी २०१२ का अंक मिला। आप द्वारा लिखा संपादकीय "हम हिंदी भाषा भूल रहे हैं" पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। लेख के अंतिम वाक्य का छोर 'विश्व हिंदी को अपना रहा है', आपका यह आकलन आशाजनक तथा विश्वसनीय लगता है। निश्चय ही विश्व पटल पर हिंदी का भविष्य सुनहरा होने के साथ साथ वैश्विक भाषाओं पर अपने वर्चस्व का विस्तार करने में सक्षम है। इस विचार हेतु साधुवाद।

समाज विकास पत्रिका दिनों दिन हर दृष्टि से आगे बढ़ रही है। समाज सुधार एवं विकास संबंधी सामग्री के साथ साथ पत्रिका का कलेवर भी निखर रहा है।

– डॉ. शंकर लाल स्वामी
नत्थूसर गेट के बाहर
बीकानेर, राजस्थान

एकजूट कार्य करें

'समाज विकास' का होली विशेषांक मिला। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री कानोड़िया जी द्वारा लिखित 'महिलाओं के बढ़ते कदम' पढ़कर बहुत खुशी हुई। जालना के सम्मेलन में उनसे मुलाकात हुई थी। १४ वर्ष से सभी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्षों से मेरा निवेदन रहा है कि महिला सम्मेलन, युवा मंच एवं मारवाड़ी सम्मेलन तीनों विरोधियों की तरह नहीं बल्कि एकजूट होकर कार्य करें, ताकि हम मारवाड़ी समाज की छवि पूरे भारतवर्ष में सर्वोपरि ला सकें। इस मुहिम में हम सब उनके साथ हैं।

– प्रेमा पंसारी, सम्बलपुर
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा
अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

नोट – अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सदैव तीनो संस्थाओं सम्मेलन, युवा मंच एवं महिला सम्मेलन के एकजूट होकर कार्य करने का हामी रहा है एवं इसके लिये हर सम्भव प्रयास करता रहा है। २००६ में भुवनेश्वर में आयोजित सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में तत्कालीन अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया की युवा मंच एवं महिला सम्मेलन के अध्यक्ष एवं मंत्री सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदेन सदस्य रहेंगे। सम्मेलन के कई राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी युवा मंच से उभरे है। आपकी भावना का हम स्वागत करते है। इस दिशा में तीनों संस्थाओं के पदाधिकारियो की संयुक्त बैठक की योजना है।

विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता समाज विकास

'समाज विकास' का ताजा अंक प्राप्त कर अति हर्ष हुआ। संकलित रचनाएँ आश्वस्त करती हैं। विकास की सीढ़ियाँ चड़ता 'समाज विकास' दिन प्रति दिन लोकप्रितया के शिखर छू सकेगा।

– केसरीकांत शर्मा, 'केसरी'
आनंदपुरा वार्ड - १
मण्डावा (राजस्थान)

जन जागृति की मशाल जलाए रखें

समाज विकास का फरवरी २०१२ अंक मिला। धन्यवाद। सामाजिक चेतना और जीवंत संवाद का मंच है यह पत्र। सम्पादकीय में आपने समसामयिक अहम् मुद्दे को उठाया है कि "हम हिन्दी भाषा भूल रहे हैं"। आज हिन्दी कम और हिंगलिस का प्रयोग ज्यादा हो रहा है और हम इसे सहज ले रहे हैं। यह हिन्दी के मूल स्वरूप के साथ तो छेड़-छाड़ है ही, इसके अस्तित्व को भी खतरा है। आज बोलियां लुप्त होती जा रही हैं। बोली बचेंगी तो ही भाषा बचेंगी। वैश्विकरण के नाम पर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है और हम नवांकुरों को इंगलिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश दिलाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और स्वयं की भाषा, और संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। आपकी चिंता से सहमत होते हुए कहना चाहूँगा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में) निज भाषा ही उन्नति का मूल है।

ताऊ शेखावाटी का होली गीत एवं शंकर झकनाड़िया की कविता अच्छी लगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया की महिलाओं के प्रति दृष्टि एवं संतोष सराफ का 'प्रगति का पैमाना परिवर्तन' चिंतनपरक आलेख हैं। सुप्रिया की शाकाहार चेतना जीवन शैली एवं नजरिय को बदलने वाली है। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों को समेटे पत्रिका मारवाड़ी समाज को जोड़ने का काम करती है। सभा, सम्मेलनों के माध्यम से एक संदेश जाता है समाज में। आप जन-जागृति की यह मशाल जलाए रखें।

– शिशुपाल सिंह 'नारसरा' फतेहपुर, सीकर

मुझे विश्वास है कि आपके संपादकत्व में इस सामाजिक मुख पत्र की विशेष उन्नति होगी।

– राधेश्याम पोद्दार
कांकुड़गाछी, कलकाता

सम्पादकीय

धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य

– सीताराम शर्मा

निःसन्देह गत कई दशकों से समाज एवं देश में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में एक लगातार गिरावट आ रही है। सामाजिक स्तर पर टूटते परिवार, बढ़ते तलाक, अभूतपूर्व आडम्बर एवं दिखावा, बजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी तथा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, आर्थिक घोटाले इन मूल्यों की गिरावट की कहानी ही कहते हैं। अब तो कोई क्षेत्र न्यायपालिका, पत्रकारिता, यहां तक की सुरक्षा भी इससे अछूता नहीं बचा है।

धन की महत्ता एवं बढ़ते प्रभाव ने सभी नीतियों, सिद्धान्तों, एवं मूल्यों को बौना कर दिया है। भौतिकवादी एवं भोगवादी युग में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में एक अप-संस्कृति का जन्म हो रहा है। विवाह जैसी पवित्र, शाश्वत एवं वैदिक परम्परा की महत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाना इसी अप-संस्कृति का परिचायक है।

जीवन एवं मृत्यु के बीच विवाह सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण संस्कार हैं। प्रायः सभी धर्मों में विवाह को ईश्वर का वरदान माना गया है। सम्भवतः यही वजह है कि प्रत्येक विवाह में धार्मिक पुजारी की उपस्थिति आवश्यक है। चाहे वह पुजारी या ग्रन्थी हो, इमाम या काजी हो, या भले ही पादरी हो। सभी धर्मों में वैवाहिक संस्था की पवित्रता एवं शाश्वतता का सम्मान किया गया है तथा तलाक को अवांछित एवं दुःखद बताया गया है।

निःसन्देह विवाह के रूप एवं स्वरूप में कतिपय परिवर्तन हो रहे हैं। कुछ शुभ, कुछ अशुभ। समाज को इन प्रश्नों पर विचार करना होगा एवं समयानुसार अपने आपको ढालना होगा। प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, दहेज, दिखावा, आडम्बर, तलाक सामाजिक प्रश्न हैं जिन पर बातचीत आवश्यक है। धन एवं सम्पन्नता के अहंकार में मनुष्य को स्व.केन्द्रीय बना दिया है। वह व्यक्तिवादी बनता जा रहा है। अपने अतिरिक्त किसी अन्य के विषय में सोचना नहीं चाहता। अपने व्यक्तिगत सुख एवं आनन्द में किसी भी तरह की कमी या दखलअन्दाजी को वह बर्दाश्त करने के लिये तैयार नहीं है। उसके लिये अपना सुख एवं अपना जीवन ही सर्वोपरि है। उसे अपने सामाजिक दायित्व से कोई सरोकार नहीं। सामाजिक जिम्मेवारी के बन्धन से मुक्त यह व्यक्ति सामाजिक नैतिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करता, वह एक ऐसे माहौल में जीना चाहता है जहां वह स्वतंत्र, स्वच्छंद एवं मनमर्जी का जीवन केवल अपने सुखों के लिये जी सके। उसे पारिवारिक बंधनों रिश्तों की परवाह नहीं है, ये रिश्ते उसकी मनमानी जीवनशैली में रोड़ा अटकाते हैं। सफलता एवं सम्पन्नता के खुमार में उसे न संयुक्त परिवार की पर्वाह है और न ही समाज की। समाज की मर्यादाओं को अपनी खुशी में कांटा समझता है। जीवन के तराजू पर तौलता आज का समाज केवल 'टका धर्म' में विश्वास करता है। धन बोलता है, धन चलता है। हमें इस टका धर्म को अलविदा करना होगा। अन्यथा सामाजिक - नैतिक मूल्यों की गिरावट को रोकना सम्भव नहीं होगा। विवाह जैसी पवित्र संस्था को खतरा बना रहेगा। एक वर्ग है जिसे समाज की परवाह नहीं है। क्योंकि ये समाज को धत्ता बताने की ताकत का गुमान रखते हैं। तभी तो हाल ही में आयोजित एक परिचर्चा में कुछ एक वक्ता वैवाहिक संस्थान की महत्ता खोने की बात करते-करते दूसरी प्रासंगिता पर भी सवाल उठा गये, यहां तक कि समलैंगिक विवाह की चर्चा तक कर डाली।

यह दुर्भाग्य है कि समाज ने 'धन' के समक्ष आत्म समर्थन कर दिया है। आज समर्थ कुछ भी कर सकता है। वह समाज को अंगुली पर नचाता है। समाज उस पर अंगुली उठाने की क्षमता को खो रहा है।

यह दुर्भाग्य है कि समाज में 'सही' को 'सही' बोलने वाले प्रायः लुप्त हो गये हैं। धन के पहिये के रथ पर समाज चल रहा है। जो समर्थ है, जो धनी है वही सही है। इसीलिये तो जब बेटा बाप से अधिक धनी हो जाता है तो परिवार एवं समाज के कानून के साथ-साथ बाप-बेटे के रिश्ते भी वही तय करता है।

समाज भी इस स्थिति के लिये कहीं न कहीं दोषी है। कोई भी खुलकर नहीं बोलना चाहता, सभी अपने छोटे-मोटे स्वार्थ के चलते मूक एवं पंगु बन गये हैं। एक समय था जब समाज में ऐसे व्यक्ति थे जो मुंह पर कहने का साहस रखते थे कि 'तुम गलत कर रहे हो, समाज यह बर्दाशत नहीं करेगा।' वे समाज के पंच थे, आज तो हमारा समाज 'पंचहीन' हो गया है। सभी कांच के घर में पत्थरों से डर कर बैठे हैं। ●

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

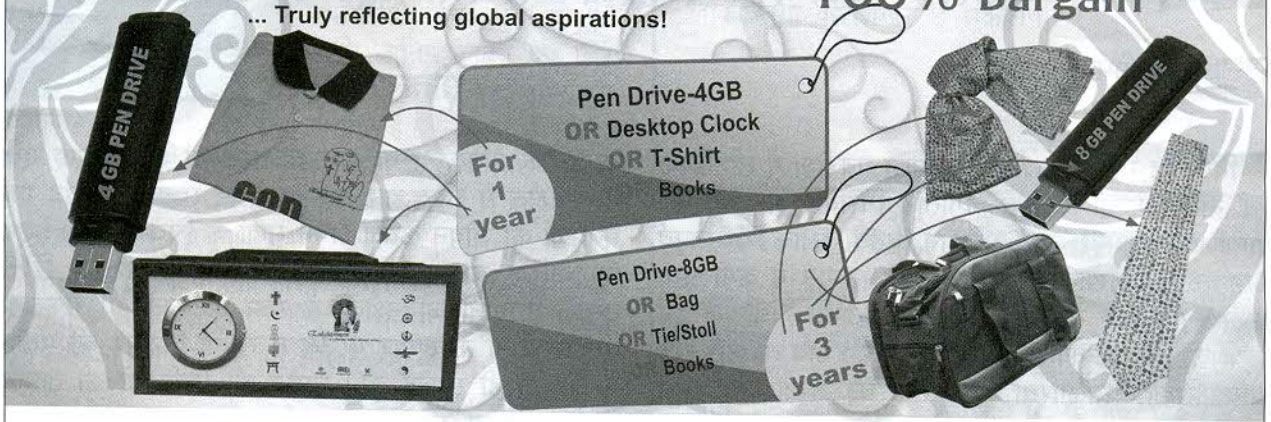

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

अध्यक्षीय

तीर्थनगरी हरिद्वार

संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक

– हरि प्रसाद कानोड़िया

सबसे पहले राम राम और राधे-राधे!

लोग सोचते है कि आखिर राम-राम अथवा राधे राधे का इतना महत्व क्यों है तो पहले तों यह समझ ले कि राम मर्यादा का प्रतीक है और सत्य का आधार तथा राधे लक्ष्मी स्वरूपा है। मानव जीवन में दोनों का ही बराबर का महत्व है। जीवन में राम बनना जरुरी है। काका कालेलकर ने भी कहा है – "जो रमता नहीं वो राम नही" और राम बनने के लिए एक जगह बैठने से काम नहीं होगा बल्कि दीन-दुनिया का भ्रमण भी करना होगा, रमना होगा। जीवन के विभिन्न पहलूओं को समझना होगा। कुसंगतियों से दूर रह कर सत्य की राह पर चलना ही मानव जीवन का आधार है और इसके लिए सबसे जरुरी है तीर्थांचलों का भ्रमण।

कहने को तो सम्पूर्ण भारतभूमि देवों की भूमि है और पूजनीय है। हमारे यहाँ धरती को मॉ एवं आसमान को पिता की गरिमा प्राप्त है। लेकिन इसके बावजूद कुछ प्रदेश अथवा प्रांत ऐसे है जिनकी महिमा अतुलनीय है। हालांकि कलकत्ता अथवा कोलकाता की काली की नगरी माना गया है तथा यहॉ एक से बढ़कर एक भव्य एवं विशाल मंदिर भी है। बावजूद, कल-कल बहती हुगली गंगा के तट पर बसे कोलकाता शहर का वो धार्मिक महत्व नहीं है जो हरिद्वार, उज्जैन, नासिक आदि शहरों को प्राप्त है। ये तीर्थनगरी कहलाते है और इनकी महिमा पुराणों तक में वर्णित है कि यहॉ पर स्नान-ध्यान से ही जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है।

ऐसी ही पावन भूमि है हरिद्वार की भी। यहॉ की माटी तक में मर्यादा व्याप्त है। मानों कण-कम में राम बसे हों। पावन गंगा के रमणीय तट पर बसी तीर्थनगरी हरिद्वार एवं उससे लगभग २५-३० किलोमीटर के अंतराल पर बसा ऋषिकेश दोनो हीं प्रकृति की अद्‌भूत रचना है। यहॉ की भूमि पर पग पड़ते ही मानो अंग-अंग ताजगी व स्फूर्ति से भर जाते है। भीड़-भाड़ भले ही हो, इसके बावजूद यहा एक मौन शांति व्याप्त है।

अप्रैल में तीर्थनगरी हरिद्वार जाने का सौभाग्य मिला। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक तीर्थनगरी हरिद्वार में हुई थी। देश भर के कई प्रांतों के लोग वहॉ पहुँचे थे। सचमुच, यह यात्रा दूसरी तमाम यात्राओं से भिन्न रही। तीर्थनगरी हरिद्वार का विशेष महत्व है, यह हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का संवाहक है। वहॉ पहुँचते ही इस बात का एहसास हो गया क्योंकि जिस अपनेपन से हरिद्वार में उत्तराखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारिओं एवं सदस्यों ने हमारी आवभगत की, वो तीर्थनगरी हरिद्वार की धरती का ही पुण्य प्रताप हो सकती है। यहॉ बहती कल-कल गंगा में स्नान करने से न सिर्फ तन की बल्कि मन की भी शुद्धि हो जाती है। सचमुच, ऐसी तीर्थनगरी में बार-बार जाने का मन होता है। धन्य है वे लोग जिन्हें तीर्थनगरी हरिद्वार में वास करने का सुयोग मिला है। ●

WONDER GROUP

wonder images

one city. one machine. one colour.

Wonder Images
PVT. LTD.

Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.

We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)

Indoor & Outdoor SOLUTIONS

- Front-lit-flex
- Back-lit-flex
- Woven P/E
- Self Adhesive vinyl
- Building wrap
- One way vision
- Vehicle / fleet graphics
- Floor and wall graphics
- Reflective Signage
- Frosted vinyl
- Canvas
- Translite
- Photo realistic poster paper
- Mesh, Tyvek, Yupo

only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E

Hundreds of colours & media for Indoors

5 State-of -the-art printing machine

Eastern India's Largest Outdoor Printers.

Contact Us:

Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in

Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

तीर्थनगरी में बैठक होने से कार्य की लालसा तीव्र होती है

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

८ अप्रैल २०१२ को प्रसिद्ध तीर्थनगरी हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक नवगठित उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में संपन्न हुई। गत वर्ष ३ सितम्बर २०११ को पुरी के निकट भुवनेश्वर में अखिल भारतीय समिति की बैठक हुई थी। भुवनेश्वर पुरी के सन्निकट होने के कारण भगवान जगन्नाथ का वास स्थल है, वहीं हरिद्वार क्षेत्र का भी खास महत्व है। हरिद्वार में पुण्य-प्रवाहिनी गंगा अविरल बहती है। हमारे देश में नदियों को संस्कृति का संवाहक माना गया है। नदियां हमारे मानस के साथ अन्तरंग रूप से जुड़ी हुई है। मुझे तीर्थ क्षेत्र की थोड़ी विवेचना करना यहा इसीलिए जरूरी लगा क्योंकि अखिल भारतीय समिति, सम्मेलन की नीति निर्धारक समिति है तथा महत्वपूर्ण समिति होने के कारण दोनों ही जगह इस समिति के लिए अनुकूल थी।

भुवनेश्वर बैठक में नयी शाखा स्थापित करने, सदस्यता बढ़ाने, सादगी का पालन करने एवं फिजूलखर्ची रोकने पर सार्थक बहस हुई थी। नयी शाखा कब, कहां, कैसे खोली जाए इस विषय पर विचार-विमर्श चला। सदस्य सम्मेलन की रीढ़ है अतः नये सदस्य सम्मेलन से कैसे जोड़े जाएं बैठक में इसके बारे में चर्चा चली। बेमतलब का खर्च या दिखावापन समाज को किस कदर लीलता जा रहा है, इस दोष से बचने के उपाय पर भी बैठक में चर्चा चली।

मेरा यह मानना है कि फिजूलखर्ची पर समय रहते यदि हमलोग लगाम नहीं लगाएंगे तो समाज विनाश के कगार पर पहुंच जाएगा। समाज में तामझाम से हो रहे शादी समारोह और धार्मिक कथा आयोजन में सादगी नहीं बरती गयी तो समाज आर्थिक रूप से खोखला हो जाएगा। खोखलेपन का परिणाम यह होगा कि समाज में आर्थिक विषमता की खाई चौड़ी हो जाएगी।

हरिद्वार की बैठक में देश के विभिन्न प्रांतों से अखिल भारतीय समिति के सदस्य भाग लेने पहुंचे थे। समिति के सदस्यों ने सम्मेलन को समाजोपयोगी कैसे बनाया जाए इस विषय पर सुझाव दिए। सम्मेलन को और भी कैसे चुस्त-दुरुस्त बनाया जाए इसके बारे में सदस्यों ने सुझाव दिए। बैठक में भाग ले रहे प्रांतीय अध्यक्ष और मंत्री ने प्रांतीय गतिविधि की जानकारी दी।

हरिद्वार की तरह देवभूमि में बैठक होने से हमारे अंदर का संस्कार जाग्रत हो उठता है। ऐसी जगह में बैठक होने से सांगठनिक विषयों पर चर्चा तो होती ही है साथ ही कुछ आध्यात्मिक लाभ भी मिलता हैं। संगठन को बलशाली बनाना हम सबका एकमेव लक्ष्य है अतः पुण्य क्षेत्र में हमलोग यदि संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लें तो निश्चय ही उसका सकारात्मक फल मिलेगा। मैं तो कहूंगा कि हरिद्वार की तरह अन्य तीर्थ क्षेत्र में आगामी बैठक करने से लक्ष्य भेदने का निर्णय लेकर ही बैठक करेंगे क्योंकि ऐसे क्षेत्र में मनोबल बढ़ता है, कार्य करने की लालसा और भी तीव्र होती है।

हरिद्वार बैठक में संगठन को मजबूत करने जैसे पक्षों पर बातचीत तो हुई ही साथ ही "समाज का बदलता स्वरूप" विषय पर संगोष्ठी भी आयोजित की गई। समय बदलने के साथ ही समाज में किस तरह परिवर्तन आ रहा है इस विषय पर वक्ताओं ने सुझाव रखे। मेरा मानना है कि अखिल भारतीय समिति की बैठक में समाज के ज्वलन्त विषयों पर संगोष्ठी जरूर होनी चाहिए। संगोष्ठी इसीलिए होनी चाहिए कि उस मंच पर पूरे देश से समिति के सदस्य भाग लेने आते हैं तथा विचार रखते हैं एवं सुनते हैं। बैठक में ऐसी गोष्ठी से लाभ यह होता है कि समाज के गुण-अवगुण पर चर्चा होगी, जिससे खामियों को सुधारने का मौका मिलेगा। परिवर्तन की आंधी के बीच हम अपने संस्कारों को सुरक्षित रखते हुए बदलाव के हमराही कैसे बनें गोष्ठी में इन विषयों पर चर्चा होगी।

तीर्थ क्षेत्र का विशिष्ट महत्व है। आधुनिकीकरण की पागल दौड़ में संस्कृति एवं सभ्यता पर तीखे अक्रमण हो रहे है। समाज शास्त्रियों का मत है कि किसी भी समाज को यदि जड़ मूल से विनाश करना हो तो उसकी संस्कृति एवं संस्कार को नष्ट कर दो। यहां इसका उल्लेख इसीलिए आवश्यक जान पड़ता है क्योंकि धार्मिक नगरी हमारे संस्कृति एवं संस्कार का वाहक है। भुवनेश्वर और हरिद्वार की तरह पुण्य नगरी में प्रवेश करते ही प्रसुप्त संस्कार जाग्रत हो उठता है। सम्मेलन समाज की संस्कृति एवं पूर्वजों से प्रदत्त संस्कार की रक्षा करने का प्रबल पक्षधर रहा है अतः धर्मनगरी में बैठक होने से हमारा दो तरह का हित होता है, एक अपने संस्कार की रक्षा होती है एवं दूसरा बैठक में समाज से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होती है।

समाज में यदि विसंगति आ गयी है तो उसे दूर करने के उपाय पर भी चर्चा की जाती है। समाज को एक संदेश जाता है कि समग्र समाज हित में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कमर कसकर तैयार है।

नवगठित उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने हरिद्वार में बैठक का आतिथ्य कर हमारे सामने एक उदाहरण पेश किया है। इस प्रान्त का गठन हुए अभी एक वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं किंतु स्थापना के छोटे से कालखंड में ही इस प्रान्त ने हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक कर महत् कार्य कर दिखाया है। इस शाखा के पदाधिकारी और सदस्य ने जिस जिम्मेवारी के साथ बैठक का आयोजन किया उसके लिए बधाई। ●

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

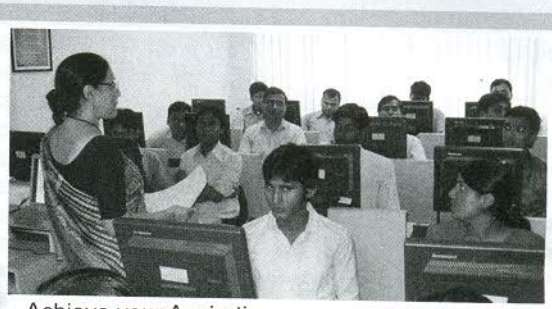

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- **NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview**
- **Certificate Course in Computer Applications**
- **Advanced Diploma in Financial Management**
- **Entrepreneurship Development**
- **Vocational & Technical Training**
- **Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)**
- **WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)**
- **Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)**
- **Diploma in Banking and Finance**
- **Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I**

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

धार्मिक बनें, धर्मभीरु नहीं

– **संजय हरलालका**, सुयुक्त मंत्री

आजकल धार्मिक आयोजनों का बहुत बोलबाला हो गया है। जिस शहर या गली में देखो, कोई न कोई धार्मिक संस्था का परचम लहराता मिल जायेगा। देश के जिस किसी भी मन्दिर में जाओ, धर्म के नाम पर दुकानदारी का परिचय हो जायेगा। मन्दिर के पण्डे हों या पुजारी, सभी भगवान के नाम पर अपनी-अपनी दुकान खोल कर बैठे हैं। इसी का लाभ ले रहे हैं कथा एवं प्रवचन के नाम पर अपनी दुकान खोल कर बैठे कुछ तथाकथित संत। धर्मभीरु जनता से लाखों रुपये अनुदान के नाम पर लेकर ये कथाकार अपनी तिजोरी भरने में लगे हैं। विगत दिनों में कई ऐसे संतों और बाबाओं का नाम सुर्खियों में छाया रहा जो न सिर्फ धर्म के नाम पर हमारे देश की भोली-भाली धर्मभीरु जनता को ठग रहे हैं बल्कि कई तो इससे भी आगे सेक्स क्रिया तक में लीन रहे हैं। इनमें संत आशाराम बापू, नित्यानन्द महाराज से लेकर वर्तमान के सबसे चर्चित निर्मल बाबा तक का उल्लेख किया जा सकता है। बावजूद इसके हमारे देश की धर्मभीरु जनता की मेहरबानी से आज भी इनकी दुकानदारी रुपी बादशाहत कायम है।

इन पण्डों, पुजारियों एवं तथाकथित संतों की तर्ज पर अनेक लोगों ने कोई न कोई धार्मिक संस्था बनाकर अपनी दुकान खोल ली है। कोलकाता महानगरी में तो मानों सभी लोग धार्मिक हो गये हैं। सैंकड़ों करोड़ रुपया प्रतिवर्ष धार्मिक आयोजनों के नाम पर आडम्बर, दिखावा व प्रदर्शन में खर्च हो रहा है। जो व्यक्ति जिस देवता को मानता है, वह भला उस देवता के नाम पर होने वाले धार्मिक आयोजन में चन्दा देने से कैसे मना कर सकता है? भगवान नाराज जो हो जायेंगे? उनकी इसी भावना के कारण धर्म की दुकान चला रहे लोगों की चान्दी कट रही है।

अब तक मैंने जो कुछ लिखा, उससे आप यह अंदाजा लगा रहे होंगे कि मैं नास्तिक प्रवृत्ति का व्यक्ति हूँ इसलिए ऐसी बातें लिख रहा हूँ। जबकि ऐसा कतई नहीं है।

अगर आप धर्मग्रन्थों का अवलोकन करें, उन्हें ध्यान से पढ़ें तथा सच्चे गुरुओं की वाणी को आत्मसात् करें तो आपको पता चलेगा कि धार्मिक होना अलग बात है और धर्मभीरु होना अलग। क्या किसी भी धर्मग्रन्थ या गुरु ने यह कहा है कि भगवान को छप्पन प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाए, उन्हें विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाने से ही वे प्रसन्न होते हैं? अगर ऐसा है तो भीलनी के झूठे बेर खाकर भगवान राम खुश नहीं होते बल्कि उसे श्राप दे देते।

हम सभी जानते हैं कि भगवान तो भाव के भूखे होते हैं बावजूद इसके हम चकाचौंध भरी जिन्दगी में भगवान को भी चान्दी के सिंहासन पर तोल रहे हैं। क्या यही धार्मिकता है?

नर सेवा को ही नारायण सेवा बताने वाले ईश्वर के कथनों को ही हमनें भुला दिया है। अगर कोई व्यक्ति भूख से तड़प कर या ईलाज के अभाव में मर रहा हो तो भी हम अपने धार्मिक होने का ढोंग दिखाते हुए तीर्थयात्रा पर तो निकल जायेंगे लेकिन उस व्यक्ति के प्रति झूठा अफसोस जाहिर करने के अलावा ऐसा कोई कदम नहीं उठाते जिससे कि यह लगे कि हमारे मन में धार्मिक भावना है।

अपने ईश के प्रति भक्ति होना कतई बुरा नहीं है किन्तु क्या घर में बैठे ईश रुपी वृद्ध माता-पिता या दादा-दादी के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है? जीवित ईश की अवहेलना कर मन्दिरों में की जाने वाली पूजा से क्या भगवान प्रसन्न होते हैं?

हॉल ही में कोलकाता के विख्यात कालीघाट मन्दिर में व्याप्त पण्डों की मनमर्जी के खिलाफ प्रह्लादराय गोयनका द्वारा हाईकोर्ट में दायर की गई जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए माननीय न्यायाधीश ने मन्दिर के गर्भगृह में दो पुजारियों के अलावा सभी के प्रवेश पर रोक लगा दी। हाईकोर्ट को ऐसा आदेश क्यों देना पड़ा? क्योंकि यहां पर लोगों की धार्मिक भावनाओं का खुलेआम शोषण हो रहा था।

घोर कलयुग में जी रहे हमलोगों को आज इस पर चिन्तन करना होगा। पूरे देश में, मन्दिर हों या धार्मिक आयोजन, आप और हम जैसे श्रद्धालुओं की बदौलत ही चल रहे हैं। ऋषि-मुनियों के हमारे देश में यज्ञ-हवन-पूजा-पाठ की परम्परा आदि काल से चली आ रही है जिसे आगे भी जारी रखना है किन्तु धार्मिक भीरुता के कारण नहीं, धार्मिक भावना के साथ।

आजकल क्रूजों पर कथाओं एवं प्रवचनों का नया सिलसिला शुरु हुआ है। मन्दिर में जाकर १० मिनट भी भगवान के सामने मत्था न टेकने वाले लोग क्रूजों पर कथा श्रवण करने जाते हैं। किसी भी कार्य के लिए स्थान का बहुत बड़ा महत्व होता है इसीलिए कहते हैं स्थानम् प्रधानम्। कथा श्रवण हो या ईश का ध्यान, उसके लिए प्रयुक्त स्थान पर ही मन स्थिर हो सकता है। क्या सिनेमा हॉल में सिनेमा देखते वक्त हम भगवान के नाम का स्मरण कर सकते हैं? नहीं, क्योंकि वहाँ हमारा ध्यान सिनेमा की तरफ है। उसी तरह क्रूज में ईश का ध्यान नहीं हो सकता, वहाँ समुद्र की लहरों का आनन्द ले सकते हैं। लेकिन धर्म की दुकान खोलकर बैठे लोगों एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों ने मिलकर इस दुकानदारी को भी अमली जामा पहना ही दिया है।

आज हमें गम्भीरता से इन सब बातों पर चिन्तन करना होगा। हमारी अगली पीढ़ी ऐसे ही धर्म से विमुख होती जा रही है। अगर हमनें उन्हें आडम्बर व दिखावा परोसा तो वह दिन दूर नहीं होगा जब धार्मिक आयोजनों में भी कॉकटेल पार्टियों का बोलबाला होगा। क्योंकि हम उन्हें जैसा आईना दिखायेंगे, वे तो वहीं सीखेंगे। इसलिए धर्मभीरु बनकर भगवान से डरने की बजाय उन्हें अपने कर्मों के माध्यम से अपना सखा बनाईये। फिर देखियेगा, बिना कोई तीर्थ किये भी कैसे भगवान अपनी ममता की वर्षा आप पर करेंगे। ●

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भीमसरिया को श्रद्धांजलि

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया का २८ मार्च २०१२ की सुबह ४.०० बजे स्वर्गवास हो गया है। वे बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी चिकित्सा समिति, व्यवसायिक संघ जैसे कई संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े थे। श्री भीमसरिया के पार्थिव शरीर को इनके पैतृक निवास स्थान बड़हिया के लिये प्रस्थान किया गया। प्रस्थान करने के पहले इन्हे बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, डाक बंगला रोड स्थित कार्यालय भवन में लाया गया और शोकाकुल सम्मेलन सदस्यों ने उनके पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शोकाकुल सदस्यों में श्री रामपाल अग्रवाल "नूतन", श्री कमल नोपानी, श्री राजेश बजाज, श्री शिवकरण दूदवेवाला, श्री राजेश सिकारिया, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्री निर्मल झुनझुनवाला, श्री महेश जालान, श्री अंजनी सुरेका, श्री गणेश खेमका, श्री पवन भगत, श्री प्रभु दयाल भरतीया, श्री महावीर बिदासरिया, श्री बनारसी प्रसाद झुनझुनवाला आदि उपस्थित थे।

उनके आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सोमवार, २ अप्रैल २०१२ को कोलकाता चेंबर ऑफ कॉमर्स में एक शोकसभा का आयोजन किया गया। स्व. भीमसरिया की तस्वीर पर माल्यार्पण के पश्चात् शोकसभा की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि वह गहरी सूझ-बूझवाले एक कर्मठ व्यक्ति थे। बद्री बाबु से अपने वर्षों के संबंधों की चर्चा करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सदैव हँसमुख सही मायने में अजातशत्रु थे। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि उन्होंने कभी किसी पद की लालसा नहीं रखी एवं चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी। अन्य उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल ने कहा कि हमने एक निष्ठावान समाज सेवक को खो दिया। संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका ने कहा कि वो एक अच्छे अभिभावक होने के साथ ही एक अच्छे मित्र भी थे। राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने शोक प्रस्ताव पढ़ा। दो मिनटों के मौन के पश्चात् सभा की समाप्ति हुई। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी, श्री घनश्याम शोभासरिया, श्री ओम लडिया, श्री प्रेमचंद सुरेलिया समेत कई गणमान्य लोगों ने दिवंगत बद्रीप्रसाद भीमसरिया को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

सामाजिक कार्यकर्ता गोविन्द शर्मा का देहावसान

सुपरिचित सामाजिक कार्यकर्ता एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा का गत १८ अप्रैल २०१२ को आकस्मिक देहावसान हो गया। सम्मेलन उनकी आत्मा की शांति के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अखिल भारतीय समिति की बैठक : हरिद्वार में

समाज सुधार में युवा एवं महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

– सम्मेलन अध्यक्ष कानोड़िया –

मंचस्थ (दाये से बाये) – श्री जय प्रकाश मुंधड़ा, श्री कैलाशपति तोदी, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री संतोष सराफ, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया (राष्ट्रीय अध्यक्ष), श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रमेश चन्द गोपीकिशन बंग, दिलीप गांधी एवं श्री विजय गुजरवासिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक ८ अप्रैल २०१२ को सम्मेलन के नवगठित प्रांत उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में तीर्थ नगरी हरिद्वार में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता की सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने। स्वागत भाषण दिया प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रंजीत जालान ने।

सर्वप्रथम उत्तराखंड के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रंजीत जालान ने अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एवं मंचस्थ अतिथियों का माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया। अपने स्वागत भाषण में श्री जालान ने उत्तराखंड शाखा का परिचय देते हुए कहा कि अभी यह संस्था एक नवजात शिशु है जिसका एक साल भी पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि आप लोगों के मार्गदर्शन से हमने उत्तराखंड की पावन भूमि पर बीज तो बो दिया है, अब साथीगण इसे सींचे, आगे बढ़ाए। तदोपरांत सर्वसम्मति से गत वर्ष की कार्यवाही पारित हुई। इसके बाद सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने महामंत्री की रिपोर्ट के माध्यम से सालभर के कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा पेश किया एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने विगत वर्ष के आर्थिक लेखा–जोखा की समीक्षा पेश की।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने धर्मनगरी हरिद्वार की महिमा की चर्चा करते हुए कहा कि यह स्थान गंगा का स्वरूप है। यह देवभूमि हमें हमारे संस्कारों की याद दिलाती है। उन्होंने संगठन की मजबूती के लिए सभी से सदस्यता बढ़ाने की अपील करते हुए कहा कि हमारे भीतर एक अग्नि होनी चाहिए कि सदस्यता कैसे बढ़े? हिमालय की ऊंचाई तक कैसे पहुचा जाए, यह सभी को सोचना है। "सादगी–क्रांति" लानी होगी। उन्होंने महिला शक्ति एवं युवा शक्ति से भी "सादगी--क्रांति" का आह्वान किया। साथ ही साथ मारवाड़ी समाज को राजनीति में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने कहा कि सम्मेलन के मार्गदर्शन से ही युवा मंच को प्रेरणा मिलती है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन पिछले ७७ वर्षों से समाज को जो नेतृत्व प्रदान कर रहा है वह सारे राष्ट्र का

सभा को सम्बोधित करते उत्तराखण्ड प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत जालान

गौरव है। श्री गांधी ने बताया कि युवा मंच आज देश भर में २५० एंबुलेंस के माध्यम से दूर-दराज के गांवों तक अपनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर रहा है।

उत्तराखंड प्रांत के महामंत्री श्री रंजीत टिबड़ेवाल ने बताया कि संस्था को पूरे हुए अभी एक साल भी नहीं बीता है तदापि कई सेवामूलक कार्यक्रम हाथों में लिए हैं- - गरीबों में कंबल वितरण एवं स्वास्थ्य शिविर। भावी कार्यक्रम के बारे में उन्होने सदस्यात विस्तार के साथ स्थापना दिवस पर कंबल वितरण की घोषणा क। साथ ही गरीब कन्याओं के विवाह में भी भागीदारी की बात कही।

बिहार प्रांत के महामंत्री श्री राजेश बजाज ने अपनी बात रखते हुए कहा कि अब तक २५३ शाखाओं में ५८ के दौरे हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में हरित क्रांति लाने के लिए एक लाख पौधे लगाने पर विचार चल रहा है। श्री बजाज ने बताया कि बीते जाड़े में विभिन्न शाखाओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगों के बीच लगभग १० हजार कंबलें बांटी गयी तथा २५० छात्राओं को निःशुल्क साईकिल प्रदान की गयी। प्रादेशिक सम्मेलन की ओर से "समाज गौरव गान" की एक सीड़ी भी बनबाई गयी है। श्री बजाज ने आग्रह किया कि सीड़ी को सभी बैठकों की शुरुआत से पूर्व बजाया जाए। सीड़ी का विमोचन करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि इसका एक-एक शब्द महत्वपूर्ण है।

महाराष्ट्र के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश मूंधड़ा ने महाराष्ट्र की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस साल सबसे बड़ा कार्यक्रम नासिक में युवा मंच ने किया। जिनकी उम्र ४५ से पार जा चुकी है उन्हें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़ना चाहिये। उन्होने कहा कि सदस्यता बढ़ाने के लिए शाखाएं बढ़ानी होगी और इसके लिए हम लगातार प्रयास कर रहे हैं।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने कहा कि संगठन ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने कहा कि समाज में दो चीजों की बेहद जरूरत है – समाज सुधार एवं जरूरतमंदों की जरूरत को पूरा करना। श्री गुजरवासिया ने बताया कि हालांकि समाज सुधार की दिशा में हम उतना आगे नहीं बढ़ पाए हैं लेकिन जरूरतमंद लोगों की जरूरतों को पूरा करने में निःसंदेह हम सक्षम है। क्षमतानुसार निर्धन कन्याओं के विवाह पर जोर दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक पांच कन्याओं का विवाह कराया जा चुका है तथा आगामी महिनों में भी कुछ कन्याओं का विवाह कराया जाएगा। साथ ही बच्चों को फीस एवं किताब–कॉपियों के माध्यम से सहायता दी जा रही है। सदस्यता बढ़ाने की बात भी कही।

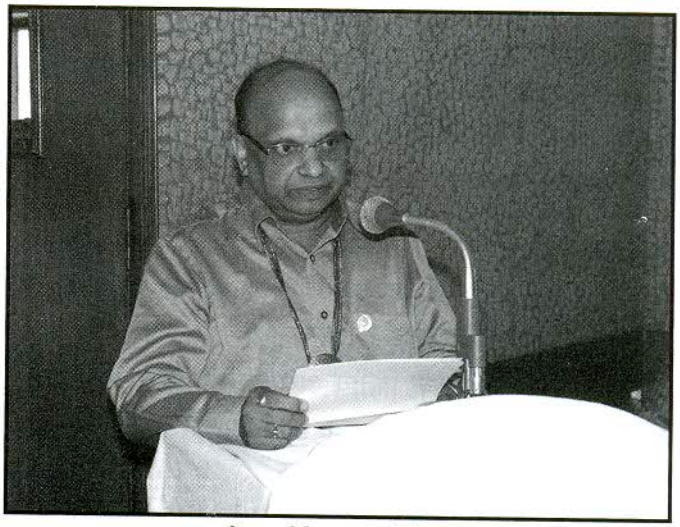

सभा को सम्बोधित करते बिहार प्रांत के महामंत्री श्री राजेश बजाज

दिल्ली शाखा के प्रांतीय महामंत्री श्री पवन गोयनका ने भावी कार्यक्रमों के तहत सदस्यता बढ़ाने एवं शैक्षनिक

कायक्रम के माध्यम से शिक्षा के विकास की बात कहीं।

मध्य प्रदेश के प्रांतीय महामंत्री श्री कमलेश नाहटा ने बताया कि मध्य प्रदेश में संस्था का गठन सन् २००१ में

सभा को सम्बोधित करते उत्तराखण्ड प्रांत के मंत्री श्री रंजीत टिबड़ेवाल

हुआ था लेकिन संस्था पिछले ४-५ साल से काफी सक्रिय है। उन्होंने कहा कि हम होली मिलन का कार्यक्रम "आदर्श होली" के रूप में मनाते हैं एवं दीपावली में उन घरों में दीप जलाते है, जहां अंधेरा होता है और यह कार्य दूर-दराज के गांवों तक किया जाता है।

छत्तीसगढ़ प्रांत के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अरुण हरितवाल ने कहा कि हर साल गांवों में ३०० कंबलें बांटी जाती है – जरूरतमंद लोगों के बीच। इसके साथ गरीब नवजात शिशुओं को बेबी कीट दिया जाता है। श्री हरितवाल ने बतया कि फिलहाल रोजाना ३० बेबी कीट लगते है तथा भावी योजना यह है कि सारे प्रदेश में यह कार्यक्रम लागू हो। बताया कि अब तक ६१ गरीब जोड़ों का सामूहिक विवाह भी कराया गया है। श्री हरितवाल ने बताया कि यही नहीं बल्कि यहां के सबसे खतरनाक नक्सली इलाके बस्तर में भी मारवाड़ी समाज का गठन किया गया है। बताया कि अब तक बस्तर में १० शाखाएं खोली जा चुकी है। रायपुर में २२ अप्रैल को होने जा रहे अधिवेशन में उन्होंने उपस्थित सभी प्रांतों के पदाधिकारयों को आने का न्यौता दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने सम्मेलन की वेबसाइट www.marwarisammelan.com के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसमें सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम, पते व अन्य सम्पर्क सूत्रों सहित पूर्ण विवरण उपलब्ध है, साथ ही सम्मेलन के मुखपत्र "समाज विकास" को भी समाहित किया गया है।

"सम्मेलन डायरेक्टरी २०११-१३" का विमोचन सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इसके बाद तीन प्रस्ताव रखे गए – संगठन, समाज सुधार एवं भावी कार्यक्रम।

"संगठन" की मजबूती संबंधी प्रस्ताव पढ़ा उत्तराखंड प्रांत के अध्यक्ष श्री रंजीत जालान ने एवं अनुमोदन किया पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने। इस प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री गोविंद इंदौरिया ने कहा कि इसके लिए एक कमेटी बनायी जाए एवं हर महिने – पन्द्रह दिन के अंतराल में बैठक होनी चाहिए।

बिहार प्रांत से आए श्री महेश जालान ने कहा कि शाखा एवं सदस्यता बढ़ाने के लिए एकल सदस्यता संबंधी अभी तक कोई स्पष्ट नीति नहीं बन पायी है। सम्मेलन से

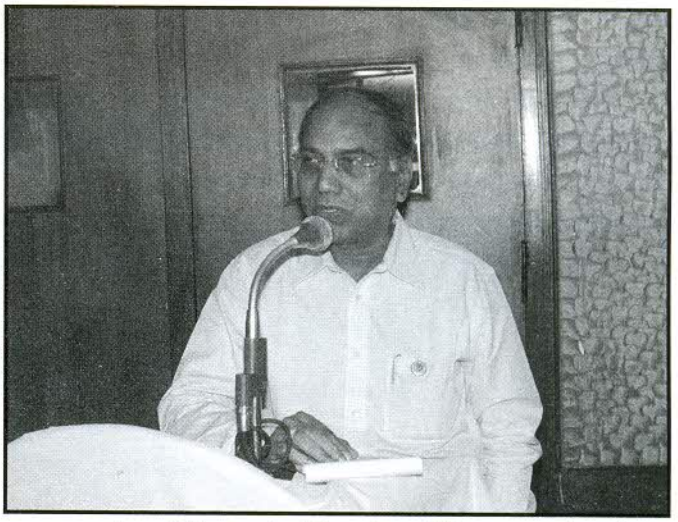

सभा को सम्बोधित करते पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया

महिलाओं एवं युवाओं को भी जोड़ा जाए तथा शाखाओं का नियमित दौरा हो।

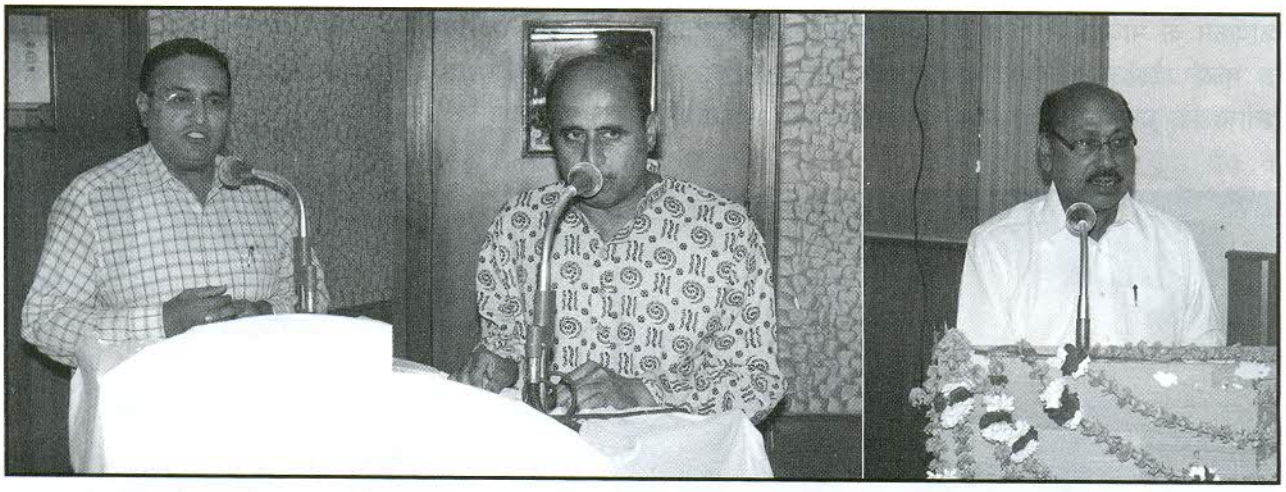

सभा मे अपनी बात रखते हुए छत्तीसगढ़ प्रांत के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अरुण हरितवाल, मध्यप्रदेश के महामंत्री श्री कमलेश नाहटा एवं उत्तराखण्ड के श्री रविकांत गप्ता

श्री प्रमोद गोयनका ने अपने विचार रखते हुए कहा कि इसके लिए एक जन सम्पर्क कमेट बनायी जाए। श्री वीरेन्द्र धोका ने पूना में बनी मारवाड़ी सम्मेलन की एक धर्मशाला का जिक्र करते हुए बताया कि आज उस पर दूसरे लोगों ने हक जमा लिया है। उन्होने कहा कि सालभर में राष्ट्रीय पदाधिकारियों के २-४ दौरे होने चाहिए। मध्य प्रदेश से पधारे श्री कमलेश नाहटा ने कहा कि सभी प्रांतों एवं शाखाओं के चुनाव एक ही समय पर होने चाहिए। दिल्ली से आए श्री पवन गोयनका ने कहा कि एकल सदस्यता पर यदि कोई ठोस निर्णय लिया जाता है तो यह एक बहुत बड़ी बात होगी। श्री गेविन्द शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर जो अभियान चल रहे हैं, उनका "ब्लू प्रिंट" सामने आना चाहिए तथा संविधान में यदि किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है तो वो भी होना चाहिए। महाराष्ट्र से पधारे श्री जय प्रकाश मूंधड़ा ने कहा कि यदि चैन सिस्टम में काम हो तो सदस्यता बढ़ाने में सुविधा मिल सकती है और इसके लिए जरूरी है कि संविधान सभी के लिए एक हो। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग ने कहा कि हर प्रदेश के अध्यक्ष एवं महामंत्री को बुलाकर सदस्यता के स्वरूप पर स्पष्ट चर्चा हों। महिलाओं को आगे बढ़ाए, महिला शक्ति का फायदा लें। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में महिलाएं जिस जोर शोर से कार्य कर रही है, अन्यत्र नहीं। श्री अरूण हरितवाल ने कहा कि नियमावली एक हों एवं सम्मेलन के उद्देश्य एवं विचार स्पष्ट होने चाहिए। उन्होंने

सवाल जवाब करते श्री गोविन्द शर्मा एवं श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'